

स्वस्थ-अध्ययन

[विमल प्रश्नोत्तर-रत्नमाला तथा गौतम कुलकम्]



— सम्पादक —

जैनाचार्य पूज्य श्री जयमलजी महाराज
के सम्प्रदाय के स्वर्गीय श्रद्धेय
स्वामीजी श्री जोरावरमलजी
महाराज के सुशिष्य
प०रत्न मुनिश्री मिश्रीमलजी
महाराज (मधुकर)
न्याय-साहित्यतीर्थ





प्रकाशक —
मन्त्री श्री आत्म जागृति कार्यालय
ब्यावर (राज)

प्रथमावृत्ति १०००	मूल्य ≶) आना	वी॰ सं॰ २४७८ सम्वत् २००७

मुद्रक
श्री जालमसिंह के प्रबन्ध से
श्री गुरुकुल प्रिं॰ प्रेस, ब्यावर में मुद्रित

समर्पण



उन सभी सात्विक जीवन

के

अभिलाषियों को

—मधुकर

दो शब्द



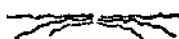
प्रस्तुत पुस्तक में छोटे छोटे दो ग्रन्थों का सम्पादन किया गया है। पहले ग्रन्थ का नाम है 'विमल प्रश्नोत्तर रत्न माला' है और दूसरे ग्रन्थ का नाम 'गौतम कुलकम्' है।

दोनों ग्रन्थों में संचित पाठ्य सामग्री जीवन को स्वस्थ बना कर आत्मा को ऊँची उठाने वाली है।

पाठक 'स्वस्थ अध्ययन' को पढ़कर सच्चा स्वास्थ्य लाभ करें। बस! यही मेरे हृदय की एक मात्र अभिलाषा है।

रक्षाबन्धन
सम्वत् २००६
तीवरी मारवाड़

प्रस्तावना



मानव जीवन का चरम लक्ष्य क्या है जिसे प्राप्त करके मनुष्य सदैव के लिए कृतार्थता का अनुभव कर सके? यह एक ऐसा प्रश्न है जो प्रत्येक विचारशील मनुष्य के मस्तिष्क में उत्पन्न हुआ करता है किन्तु जिसका सर्व सम्मत समाधान आज तक मनुष्य जाति को उपलब्ध नहीं हो सका है। इस ओर से इस प्रकार के अन्य प्रश्नों के समाधान से निराश हो कर मस्तिष्क जब यथास्थान आता है स्वस्थ होता है तो पता चलता है कि उसे इस माथापच्ची में से एक ही निष्कर्ष मिला है और वह यह कि जीवन को धर्म और नीति के पथ पर अग्रसर करते जाना चाहिए। यही जीवन की अन्तिम स्थिति को प्राप्त करने का एक मात्र उपाय हो सकता है।

यद्यपि संसार में धर्म-पन्थ अनेक हैं और साधारण व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह यह निर्णय कर सके कि वास्तव में किस पथ पर अग्रसर होने से परम कल्याण की प्राप्ति हो सकती है। फिर भी तनिक शान्त और उदार भाव से अगर विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि धर्म का एक सामान्य तत्त्व सभी पंथों में समान है और हम यदि उस तत्त्व तक पहुँच गये तो हमें अवश्य शान्ति की प्राप्ति होगी। वह तत्त्व है—नीति। जिसका जीवन नीतिमय बन जायगा, उसे अनायास ही धर्मपथ सूझने लगेगा। यही कारण है कि भारतीय साहित्य में नीति का निरूपण करने वाला साहित्य बहुत विपुल है।

नीति के भी अनेक रूप हैं। यह भी कहा जा सकता है कि नीति, शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक और विविध अर्थों में हुआ है। फिर भी हम उसे दो भेदों में अन्तर्गत कर सकते हैं—(१) व्यवहार नीति और (२) धर्मनीति। ऊपर जिस नीति का उल्लेख किया गया है वह व्यवहारनीति नहीं, धर्म नीति है। धर्मनीति आत्मधर्म की प्राथमिक भूमिका है, जिसके ऊपर धर्म का विशाल और भव्य प्रासाद खड़ा है। व्यवहार नीति एक कुशलतापूर्ण ढंग मात्र है जिससे अपना मतलब गांठने में सुविधा होती है।

अगर वृक्ष की अपेक्षा उसकी जड़ का महत्त्व अधिक हो और सुन्दर महल की अपेक्षा उसकी नींव की प्रतिष्ठा कम न हो तो यह भी कहा जा सकता है कि धर्म की अपेक्षा धर्मनीति की महिमा भी अधिक ही है।

प्रस्तुत पुस्तक में धर्मनीति का ही निरूपण किया गया है। यद्यपि यह छुद्राकाय है कलेवर उसका बड़ा नहीं है, फिर भी उसमें जो कुछ है, उसका महत्त्व बहुत अधिक है। सक्षिप्त भाषा में विस्तृत भाव प्रकट किये गये हैं। 'गागर में सागर' भर देने की उक्ति यहाँ पूरी तरह चरितार्थ होती है।

इस पुस्तक में दो रचनाएँ संगृहीत हैं—(१) विमल प्रश्नोत्तर रत्नमाला और (२) गौतम कुलक। प्रश्नोत्तर की शैली में इनकी रचना हुई है और इनमें प्रदर्शित किये हुए विचार अत्यन्त सुन्दर तथा जीवनोपयोगी हैं। महान् धर्मनीति के मर्म का निचोड़ इनमें दिया गया है। विमल प्रश्नोत्तर रत्न माला के कर्त्ता ने बिलकुल यथार्थ ही कहा है कि जो इस ग्रंथ को कंठस्थ कर लेगा वह अवश्य ही सभ्य समुदाय में आदर का पात्र बनेगा।

यद्यपि उक्त दोनों ग्रन्थ पहले भी प्रकाशित हुए हैं, किन्तु उनका ऐसा सुन्दर और उपयोगी संस्करण पहले देखने में नहीं आया। इसके अनुवादन और सम्पादन का श्रेय विद्वद्वर पं० मुनिश्री मिश्रीमलजी महाराज 'मधुकर' का है। उन्होंने अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों में से गुजरते हुए भी काफी श्रम उठा कर इस संस्करण को तैयार किया है। उनके द्वारा सम्पादित अन्य तीन रचनाएँ अभी अभी प्रकाशित हुई हैं और यह चौथी रचना है। आधुनिक लोक मानस के अनुकूल जो सामग्री, मुनिश्री ने उपस्थित की है, उससे पाठकों को बहुत लाभ पहुँचेगा ऐसी आशा है।

हार्दिक कामना है कि मुनिश्री साहित्य सेवा में अधिक अग्रसर हों और एक व्यवस्थित ग्रन्थमाला के रूप में प्राचीन रचनाओं को अर्वाचीन रूप देकर जनता के कल्याण का पथ प्रशस्त करें। प्रस्तुत रचना के लिए हम पाठकों की ओर से मुनिजी का धन्यवाद करते हैं।

श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर
ता० ३१-७-५०

शोभाचन्द्र भारिल्ल



श्रीमान् प्रेमराजजी साहिब श्रीश्रीमाल

जीवन-चरित्र

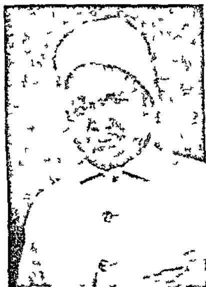


आप तीवरी के स्था० समाज के एक अग्रगण्य नेता हैं। दुर्ग (सी० पी०) में आपकी रावतमल हणुतमल के नाम से बहुत अच्छी पेढ़ी चल रही है। आपकी इस पेढ़ी में तीन भागीदार हैं। एक तो आप स्वयं और दो आपके दो बड़े भाइयों के लड़के—भँवरलालजी और नेमिचन्दजी। श्रीमान् श्रीश्रीमालजी ने अपनी पेढ़ी की ओर से इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ ५००) रुपये दिये हैं। एतदर्थ धन्यवाद।

—प्रकाशक



श्रीमान प्रेमराजजी सा० श्रीश्रीमाल



[आपका जीवन परिचय सामने के पृष्ठ पर देखिए।]

* णमोत्थु ण तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स *

स्वस्थ-अध्ययन



❀ विमल प्रश्नोत्तर-रत्नमाला ❀



किमुपादेयम् ?

गुरुवचनम् ।

(१)

प्रणिपत्य वर्धमानं, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका वक्ष्ये।
नाग-नरामर-वंद्यं, देवं देवाधिपं वीरम् ॥

(२)

क. खलु नाऽलंक्रियते, दृष्टाऽदृष्टार्थ-साधन-पटीयान् ।
कण्ठस्थितया विमल-प्रश्नोत्तर-रत्न-मालिकया ॥

(३)

भगवन् ! किमुपादेयं,
गुरुवचनं हेयमपि च किमकार्यम् ।
को गुरुरधिगत-तत्त्वः,
सत्वहिताऽभ्युद्यत सततम् ॥

(४)

त्वरितं किं कर्त्तव्यं,
विदुषा संसारसंततिच्छेदः ।
किं मोक्ष-तरोर्बीजं,
सम्यग्ज्ञानं क्रियासहितम् ॥

(१)

मैं देव, दानव और मनुष्यों द्वारा वंदित देवाधिदेव भगवान् महावीर को नमस्कार करके प्रश्नोत्तर रत्नमाला का वर्णन करता हूँ।

(२)

ऐसा कौन मनुष्य है जो इस विमल 'प्रश्नोत्तर रत्नमालिका' को कण्ठस्थ करके—अपने कण्ठ में धारण करके प्रत्यक्ष-परोक्ष अर्थों का ज्ञाता होकर सुशोभित नहीं हो जायगा ? (जैसे रत्नों की माला को कंठ में धारण करने वाला पुरुष अलंकृत होता है, उसी प्रकार इस प्रश्नोत्तर रत्नमाला को कंठस्थ करने वाला पुरुष भी अवश्य ही अलंकृत होगा।)

प्रश्न :—	उत्तर :—
	(३)
भगवन् ! उपादेय क्या है ?	गुरु के वचन।
हेय क्या है ?	बुरे काम।
गुरु कौन है ?	तत्त्वज्ञानी और सदैव प्राणियों के हित में तत्पर रहने वाला।
	(४)
विद्वान् को किस कार्य में शीघ्रता करनी चाहिए ?	संसार के प्रवाह को नष्ट करने में।
मोक्षरूपी वृक्ष का बीज क्या है ?	सदाचार से युक्त सम्यग्ज्ञान।

(५)

क पथ्यतरो धर्म , क शुचिरिह यस्य मानस शुद्धम् ।
क पण्डितो निवेकी, किं विषमवधीरणा गुरुगु ॥

(६)

कि ससारे सार, बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव ।
मनुजेषु दृष्ट-तत्त्व, स्व पर-हितायोद्यत जन्म ॥

(७)

मदिरेव मोह-जनक, क स्नेह' केच दस्यवो विषया' ।
का भववल्ली तृष्णा, को वैरी नन्वनुद्योग ॥

(८)

कस्माद्भयमिह मरणादन्धादपि को विशिष्यते रागी ।
क शूरो यो ललना-लोचनबाणैर्न च व्यथित. ।

प्रश्न :—	उत्तर :—
	(५)
अत्यन्त हितकर वस्तु क्या है ?	धर्म।
इस ससार म पवित्र कौन है ?	शुद्ध हृदय वाला।
पण्डित कौन है ?	विवेकशील।
विष क्या है ?	गुरजनो का अनादर करना।
	(६)
ससार में सार वस्तु क्या है ?	अपने तथा पराये हित के लिए सदैव तत्पर रहने वाला अपना जीवन।
	(७)
इस ससार म मदिरा के समान मूर्च्छित करने वाली वस्तु क्या है ?	आसक्ति।
लुटेरे कौन हैं ?	सासारिक विषयभोग।
जन्म मरण कराने वाली लता कौनसी है ?	तृष्णा।
मनुष्य का शत्रु कौन है ?	अकर्मण्यता।
	(८)
इस ससार म प्राणी को किससे अधिक भय होता है ?	मरण से।
अधे से भी बढकर अधा कौन है ?	ससार की वासनाओं में आसक्ति रखने वाला।
शूरवीर कौन है ?	जो स्त्री के नेत्र बाण से व्यथित न होता हो।

(९)

पातु कर्णाञ्जलिभि , किममृतमिव बुध्यते सदुपदेश. ।
किं गुरुताया मूल, यदेतदप्रार्थन नाम ॥

(१०)

किं गहन स्त्री चरित, कश्चतुरो यो न खण्डितस्तेन ।
किं दारिद्र्यमसन्तोष, एव किं लाघव याञ्चा ॥

(११)

किं जीवितमनवद्य, किं जाड्य पाठतेऽप्यनभ्यास ।
को जागर्ति विवेकी, का निद्रा मूढता जन्तो ॥

(१२)

नलिनी-दल-गत-जल-लव-तरल किं यौवन धनमथायु' ।
के शशधर कर-निकरानुकारिण' सज्जना एव ॥

प्रश्न :—	उत्तर :—
(९)	
कर्णाञ्जलि द्वारा अमृत के समान पीने योग्य वस्तु क्या है ?	सदुपदेश ।
गौरव का मूल क्या है ?	किसी से याचना न करना ।
(१०)	
किसका पार नहीं पाया जा सकता ?	स्त्री के विडम्बनामय चरित्र का।
चतुर कौन है ?	जो स्त्री के चरित्र से विचलित न होता हो ।
दरिद्रता किसे कहते हैं ?	असन्तोष ही दरिद्रता है ।
लघुता (ओछापन) क्या है ?	किसी से माँगना ही लघुता है।
(११)	
जीवन क्या है ?	पापरहित जीवन ही सच्चा जीवन है ।
जड़ता क्या है ?	कुशल होते हुए भी अभ्यास न करना ।
कौन जागता है ?	विवेकशील।
निद्रा किसे कहते हैं ?	मूढ़ता ही निद्रा है ।
(१२)	
कमल के पत्ते पर लटकते हुए जलबिन्दु के समान चञ्चल क्या है ?	यौवन, धन और आयु ।

(१३)

को नरकः परवशता,
किं सौख्य सर्व सङ्ग-विरतिर्या।
किं सत्य भूतहितम्,
किं प्रेयः प्राणिनामसवः॥

(१४)

किं दानमनाकांक्ष,
किं मित्र यन्निवर्तयति पापात्।
कोऽलङ्कार शील,
किं वाचा मण्डन सत्यम्॥

(१५)

किमनर्थ-फल मानस-
मसङ्गत का सुखावहा मैत्री।
सर्व-व्यसन विनाशे,
को दक्ष सर्वथा त्याग॥

(१६)

कोऽन्धो यो ऽकार्य रतः,
को बधिरो यः शृणोति न हितानि।
को मूको य काले,
प्रियाणि वक्तु न जानाति॥

प्रश्न —	उत्तर —
(१३)	
नरक क्या है ?	पराधीनता ।
सुख क्या है ?	सर्वथा अनासक्ति ।
सत्य क्या है ?	प्राणियों की भलाई करने वाली वाणी सत्य है ।
प्राणी को संसार में कौन सी वस्तु प्यारी है ?	अपने अपने प्राण ।
(१४)	
श्रेष्ठ दान क्या है ?	निष्काम भाव से दिया हुआ दान ।
सच्चा मित्र कौन है ?	पाप से बचाने वाला ।
सच्चा आभूषण क्या है ?	शील ।
वाणी की शोभा किसमें है ?	सत्य भाषण में ।
(१५)	
अनर्थकारी वस्तु क्या है ?	हृदय की दुविधा ।
सुखकर वस्तु क्या है ?	मित्रता ।
समस्त तृष्णा का विनाश करने में चतुर कौन है ?	जगत के प्रति विरक्त ।
(१६)	
अन्धा कौन है ?	बुरे कामों में लिप्त रहने वाला ।
बहिरा कौन है ?	जो हित की बात नहीं सुनता ।
गूंगा कौन है ?	जो समय पर प्रिय बोलना नहीं जानता ।

(१७)

कि मरण मूर्खेन,
कि चानर्घं यदवसरे दत्तम् ।
आमरणं कि शल्य,
प्रच्छन्न यत्कृत-मकार्यम् ॥

(१८)

कुत्र विधेयो यत्नो,
विद्याऽभ्यासे सदौषधे दाने ।
अवधीरणा क्व कार्या,
खल पर योषित्पर धनेषु ॥

(१९)

काऽहर्निश-मनुचिन्त्या,
संसाराऽसारता न च प्रमदा ।
का प्रेयसी विधेया,
करुणा दाक्षिण्यमपि च मैत्री च ॥

(२०)

कण्ठ-गतै-रप्यसुभि
कस्याऽऽत्मा नो समर्प्यते जातु ।
मूर्खस्य विषादस्य च
गर्वस्य तथा कृतघ्नस्य ॥

प्रश्न —	उत्तर —
(१७)	
मरण क्या है ?	मूर्खता ।
अनमोल वस्तु क्या है ?	समय पर दिया हुआ दान ।
जीवन पर्यन्त शूल की भाँति खटकने वाला क्या है ?	छिपाकर किया गया अकार्य अर्थात् गुप्त पाप ।
(१८)	
किसके लिए सदा प्रयत्न करना चाहिए ?	विद्याभ्यास और औषध दा क लिए
किसका तिरस्कार करना चाहिए ?	दुर्जन की संगति, पर स्त्री औ पर धन का
(१९)	
रात दिन किसका चिंतन करना चाहिए ?	संसार की असारता का, कि स्त्री का नहं
प्रियतमा किसे बनाएँ ?	करुणा, चतुरता और मित्र को
(२०)	
प्राणों के कण्ठ तक आने पर भी किसकी आत्मा में सुधार नहीं हो पाता ?	मूर्ख, चिंतातुर, अभिमानी कृतघ्न की आत्मा नहीं सुधर

(२१)

न पूज्य मद्वृत्त,
कमधम-माचरते तमद्वृत्तम्।
केन जित जगदेतत्,
सत्य-तितिक्षावता पुसा ॥

(२२)

तस्मै नम सुरैरपि,
सुतरा क्रियते दया प्रधानाय।
तस्माद्-द्विजितव्य,
ससारा ऽरण्यत सुधिया ॥

(२३)

तस्य वशे प्राणिगण,
सत्य प्रिय-भाषिणा विनीतस्य।
क्व स्थातव्य न्याय्ये,
पथि दृष्टा ऽदृष्ट-लाभा ऽऽढ्ये ॥

(२४)

विद्युद्विलसित चपल,
किं दुर्जन सङ्गत युवतयश्च।
कुल शैल-निष्प्रकम्पा,
के कलिकालेऽपि सत्पुरुषा ॥

प्रश्न —	उत्तर —
(२१)	
पूजनीय कौन है ?	सदाचारी।
अधम किसे कहते हैं ?	आचारहीन व्यक्ति ही अधम है।
इस जगत को जीतने वाला कौन है ?	सत्यनिष्ठ और क्षमाशील।
(२२)	
देवता भी किसको निरन्तर नमस्कार करते रहते हैं ?	दयावान को।
विद्वान को किससे डरना चाहिए ?	संसार रूपी सघन वन से।
(२३)	
प्राणी किसके वश में हो जाते हैं ?	सत्यवक्ता, प्रियभाषी और विनीत व्यक्ति के।
किस पथ पर स्थिर रहे ?	प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभदायक न्याय के मार्ग पर।
(२४)	
बिजली के समान अस्थिर तथा चंचल कौन है ?	दुर्जनों की संगति और युवतियाँ।
कलिकाल में भी पर्वत के समान अचल कौन है ?	सत्पुरुष।

(२५)

किं शोच्यं कार्पण्यं,
सति विभवे किं प्रशस्यमौदार्यम्।
ननुतरं वित्तस्य तथा,
प्रभविष्णोर्यत्सहिष्णुत्वम् ॥

(२६–२७)

चिन्ता मणिरिव दुर्लभ—
मिह किं कथमपि च ननु चतुर्भद्रम्।
किं तद्वदन्ति भूयो,
विधूत-तमसो विशेषेण ॥
दानं प्रियं वाक् सहितम्,
ज्ञानं मगर्वं क्षमान्वित शौर्यम्।
त्याग-सहितं च वित्तं,
दुर्लभ-मेतच्चतुर्भद्रम् ॥

(२८–२९)

इति कण्ठगता विमला प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषाम्।
ते मुक्ताभरणा अपि विभान्ति विद्वत्समाजेषु ॥
रचिता सितपटगुरुणा विमला विमलेन रत्नमालेव।
प्रश्नोत्तरमालेयं कण्ठगता कं न भूषयति ॥

प्रश्न —	उत्तर —
	(२५)
शोचनीय क्या है ?	कृपणता।
वैभव के होने पर प्रशंसनीय क्या है ?	उदारता।
धनहीन होने तथा अधिकार पाने पर प्रशंसनीय क्या है ?	सहनशीलता।
	(२६–२७)
इस संसार में चिन्तामणि के समान दुर्लभ वस्तु क्या है ?	चार वस्तुएँ दुर्लभ हैं, और इस प्रकार हैं —मीठी भाषा साथ दान, अभिमान रहि ज्ञान, क्षमा युक्त वीरता त त्याग युक्त धन।

(२८–२९)

इस निमल प्रश्नोत्तर रत्नमाला को जो कंठस्थ कर लेते हैं विद्वान के समूह में आभरण के बिना भी शोभा पाते हैं।

श्वेताम्बर गुरु के द्वारा बनाई हुई निमल रत्नों की माला समान यह निमल प्रश्नोत्तर रत्नमाला कंठ में धारण कर लेने पर कण्ठस्थ कर लेने पर, किसकी शोभा नहीं बनती ?

विवेक जागृत होने से राज्य का त्याग करने वाले राजा अम् ने यह रत्नमाला रची है। यह विद्वानों के लिए सुन्दर आभूषण

विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका। रचिताऽमोघवर्षेण सुधियां सदलङ्कृ



गौतम कुलकम्

कि अमय ? (अमृतम्)

अहिंसा

(१)

लुद्धा नरा अत्थपरा हवंति,
मूढा नरा काम-परा हवंति।
बुद्धा नरा खंतिपरा हवंति,
मिस्सा नरा तिन्निवि आयरंति।

(२)

त पंडिया जे विरया विरोहे,
ते साहुणो जे समयं चरंति।
त सत्तिणो जे न चलंति धम्मा,
ते बंधवा जे वसणे हवंति।

(३)

लोहाभिभूया न सुहं लहंति,
माणस्सिणो सोयपरा हवंति।
मायाविणो हुंति परस्स पेस्सा,
लुद्धा महिच्छा नरयं उविंति।

(४)

कोहो विसं किं अमयं अहिंसा,
माणो अरी किं हियमप्पमाओ।
माया भयं किं सरणं तु सच्चं,
लोहो दुहं किं सुहमाह तुट्ठी।

(१)

लोभी मनुष्य धन कमाने में ही लगे रहते हैं।
मूढ मनुष्य भोग विलासों में फँसे रहते हैं।
पंडित लोग क्षमा में ही रमण करते रहते हैं।
मध्यम श्रेणी के व्यक्ति धनोपार्जन, भोग विलास तथा क्षमा तीनों ही में समयानुसार लगे रहते हैं।

(२)

विवाद से अलग रहने वाले व्यक्ति ही पंडित कहलाते हैं।
राग-द्वेष से रहित समभावपूर्वक शास्त्र की आज्ञानुसार चलने वाले ही साधु हैं।
धर्म पर दृढ़ रहने वाले व्यक्ति ही शक्ति सम्पन्न माने गये हैं।
आपत्ति में साथ देने वाले ही बन्धु कहलाते हैं।

(३)

क्रोधी मनुष्य सुखी नहीं रह सकते।
अन्त में अभिमानियों को पश्चात्ताप करना पड़ता है।
कपट जाल रचने वाले व्यक्ति अन्त में पराधीन बन जाते हैं।
लोभी और अत्यन्त आसक्त व्यक्ति आखिर नरक के निवासी बन जाते हैं।

(४)

प्रश्न —	उत्तर —
विष क्या है ?	क्रोध।
सच्चा अमृत क्या है ?	अहिंसा।
वास्तविक शत्रु कौन है ?	अभिमान।
हित क्या है ?	प्रमाद रहित होना।
हमें भय किससे मानना चाहिए ?	माया से।
सच्चा शरण क्या है ?	सत्य।
वस्तुतः दुःख की उत्पत्ति किससे होती है ?	लोभ से।
सच्चा सुख क्या है ?	सन्तोष।

(५)

बुद्धी अचड भयए विणीय,
कुद्ध कुसील भयए अकित्ती।
सभिन्नचित्त भयए अलच्छी,
सच्चे ठियत भयए सिरी य।

(६)

चयति मित्ताणि नर कयग्घ,
चयति पावाइँ मुणिं जयत।
चयति सुक्काणि सराणि हसा,
चयेइ बुद्धी कुविय मणुस्स।

(७)

अरोइअत्था कहिए विलावो,
असपहारे कहिए विलावो।
विक्खित्तचित्ते कहिए विलावो,
बहु कुसिस्से कहिए विलावो।

(८)

दुहट्ठिया दडपरा हवति,
विज्जाहरा मतपरा हवति।
मुक्खा नरा कोवपरा हवति,
सुसाहुणो तत्तपरा हवति।

(५)

साम्य स्वभाव वाले और विनम्र व्यक्तियों के पास बुद्धि सदा
निवास करती है।
क्रोधी और दुराचारी मनुष्य अपयश के भागी होते हैं।
चपल चित्त वाले के घर दरिद्रता निवास करती है।
लक्ष्मी सत्य पर दृढ़ रहने वाले की दासी है।

(६)

कृतघ्न मनुष्य का साथ मित्र भी छोड़ देते हैं।
जितेन्द्रिय मुनि पापों से मुक्त हो जाते हैं।
(जिस प्रकार) हंस सूखे हुए सरोवरों को छोड़कर चल जाते हैं
(उसी प्रकार) बुद्धि क्रोधी मनुष्य का साथ छोड़ देती है।

(७)

ये चार बातें विलापरूप (अरण्य रोदन के समान) हैं —
अनिच्छा से बात सुनने वाले को परमार्थ की बात करना।
स्वार्थी को परमार्थ का उपदेश करना।
डाँवाडोल चित्त वाले को समझाना।
कुशिष्य को अनेक प्रकार की शिक्षाएँ देना

(८)

नृशंस नरेश प्रजा को पीड़ा पहुँचाने में लगे रहते हैं।
विद्याधर मन्त्र साधना में लगे रहते हैं।
मूर्खों का समय क्रोध करने में बीतता है।
उत्तम साधु सदा तत्त्व की खोज में लगे रहते हैं।

(६)

मोहा मत्र उग्गतरम्म रती,
मसाहिनोगा पमसम्म माहा।
नाग सुभाग चरणम्म मोहा,
सीमम्म मोहा तिमण पनिनी।

(१०)

अभूगणो माहड बमचारी,
अमिचणो माहड डिक्खधारी।
बुद्धिजुओ मोहड रायमती,
लज्जाजुओ साहड ण्क—पत्ती।

(११)

अप्पा अरी हा (यो) अणत्रट्ठियस्स,
अप्पा जमो मीलत्रओ नरम्म।
अप्पा दरणा अणव ट्ठियस्स,
अप्पा जिअप्पा सरग गई अ।

(१२)

न धम्म-कज्जा परमत्थि कज्ज,
न पाणि हिंसा परम अकज्ज।
न पेमरागा परमत्थि बधो,
न बोहिलाभा परमत्थि लाभो।

(६)

क्षमा न्म तपस्वियों की शोभा है।
शान्ति प्रिय मुनियों के लिए समाधि में रहना ही शोभाप्रद है।
ज्ञान ध्यान में लगे रहने में चरित्रवान की शोभा है।
विनय में प्रवृत्ति करना शिष्य की शोभा है।

(१०)

ब्रह्मचारी बिना आभूषणों के भी शोभा पाता है।
अपरिग्रही होने में संयमी की शोभा है।
बुद्धिमान होने में राजा के मन्त्री की शोभा है।
एक पत्नीव्रत पालन करने वाला लज्जाशील होकर ही शोभित हो सकता है।

(११)

अस्थिर चित्तवाला आप ही अपना शत्रु बन जाता है।
शीलवान् आप ही अपने यश का कारण बन जाता है।
धर्म से दूर रहने वालों का जीवन अपने लिए दुःखदायी हो जाता है।
इन्द्रियों पर विजय पाने वाला जीवन स्व पर के लिए शरणभूत बन जाता है।

(१२)

धर्म कार्य से कोई और कार्य श्रेष्ठ नहीं है।
प्राणियों की हिंसा से बड़ा कोई पाप नहीं है।
आसक्ति से बड़ा कोई बन्धन नहीं है।
सम्यक्त्व से बढ़ कर कोई ऊँचा लाभ नहीं है

(१२)

न मेनियन्ना पमया परक्का,
न मेनियव्वा पुरिसा अनिज्जा ।
न मेनियन्ना अभिमान-हीणा,
न सेनियव्वा पिसुणा मणुस्सा ।

(१४)

जे धम्मिया ते खलु सेवियव्वा,
जे पंडिया ते खलु पुच्छियव्वा ।
जे साहुणो ते अभिवंदियव्वा,
जे निम्ममा ते पडिलाभियव्वा ।

(१५)

पुत्ता य सीसा य समं विभत्ता,
रिसी य देवा य समं विभत्ता ।
मुक्खा तिरिक्खा य समं विभत्ता,
मुआ दरिद्दा य समं विभत्ता ।

(१६)

सव्वा कला धम्मकला जिणेइ,
सव्वा कहा धम्मकहा जिणेइ ।
सव्वं बलं धम्मबलं जिणेइ,
सव्वं सुहं धम्मसुहं जिणेइ ।

(१३)

पर स्त्री का सेवन नहीं करना चाहिए।
अनभिज्ञ का साथ लाभदायक नहीं होता।
अपने गौरव का ध्यान न रखने वाले व्यक्ति की सगति करना उचित नहीं है।
चुगल खोर से परिचय करना भी बुरा है।

(१४)

धर्मनिष्ठ ही सदा सगति करने योग्य है।
पडित जन ही पूछ ताछ के योग्य है।
साधु पुरुष ही वन्दन करने योग्य है।
सुपात्र हो दान देने योग्य है।

(१५)

पुत्र और शिष्य एक समान माने गये हैं।
मुनि और देवता एक समान माने गये हैं।
मूर्ख और पशु एक समान माने गये हैं।
मृतक और दरिद्र एक समान माने गये हैं।

(१६)

धर्म ससार के सभी कलाविज्ञानो से श्रेष्ठ है।
धर्म की कथा ससार की सारी कथाओ को जीत लेता है।
धर्म का बल सब बलों का सरदार है।
धर्म का सुख सब सुखो को जीत लेता है।

(१७)

जुए पमत्तस्स धनस्स नासो,
मंसे पमत्तस्स दयाइ नासो।
मज्जे पमत्तस्स जसस्स नासो,
वेसा-पमत्तस्स कुलस्स नासो।

(१८)

हिंसा —पमत्तस्स सुधम्मनासो,
चोरी-पमत्तस्स सरीरनासो।
तहा परत्थीसु पमत्तयस्स,
सव्वस्स-नासो अहमा गई य।

(१९)

दाणं दरिद्दस्स पहुस्स खंती,
इच्छानिरोहो य सुहोइयस्स।
तारुण्णए इन्दियनिग्गहो य,
चत्तारि एयाणि सुदुक्कराणि।

(२०)

असासयं जीवियमाहु लोए,
धम्मं चरे साहु—जिणोवइट्ठं।
धम्मो य ताणं सरणं गई य,
धम्मं निसेवित्तु सुहं लहंति।

(१७)

जुआरी का धन नष्ट हो जाता है।
मांसाहारी की दया नहीं होती।
शराबी की कीर्ति नष्ट हो जाती है।
वेश्यागामी का कुल नष्ट हो जाता है।

(१८)

हिंसक का धर्म नष्ट हो जाता है।
चोर का जीवन नष्ट हो जाता है।
पर स्त्री सेवन करने वाले का सर्वनाश हो जाता है। और उसे अधम गति प्राप्त होती है।

(१९)

ये चारों अत्यन्त दुष्कर हैं —
निर्धन द्वारा दान देना।
सामर्थ्य होने पर क्षमा रखना।
सुखी जीवन में इच्छाओं का निरोध करना।
युवावस्था में इन्द्रियों का दमन करना।

(२०)

संसार में प्राणियों का जीवन अशाश्वत माना गया है।
इसलिए भगवान द्वारा बताये गये धर्म का पालन करना चाहिए।
धर्म ही रक्षण, शरण और सद्गति का दाता है।
प्राणी धर्म का आचरण करके ही सुख प्राप्त कर सकता है।



